आशा की एक बूँद

Rakesh Chauhan

एक छोटे से गाँव के पास, एक किसान का खेत था। कई महीनों बारिश नहीं हुई थी, और खेत पूरी तरह से सूख गया था। किसान बहु निराश था, क्योंकि उसकी फसलें बर्बाद हो रही थीं।

उसी खेत के पास, नन्ही नाम की एक छोटी चिड़िया रहती थी। सू
के कारण, उसे रोज़ाना दाना ढूँढने में बहुत मुश्किल हो रही थी। वह बहु
परेशान थी।

एक दिन, नन्ही ने देखा कि खेत में कहीं-कहीं थोड़ी नमी बची हु है। उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि अगर वह कोशिः करे, तो शायद कुछ बदल सकता है।

अगले दिन, नन्ही पास के तालाब पर गई। उसने अपनी छोटी स
चोंच में पानी की कुछ बूँदें भरीं और उड़कर खेत पर आई।

उसने धीरे-धीरे खेत की दरारों में पानी की बूँदें गिराना शुरू कर दिया। यह काम बहुत छोटा था, लेकिन नन्ही ने हार नहीं मानी।

हर दिन, नन्ही तालाब से पानी लाती और खेत को सींचती रही। किसान ने उसे देखा और सोचा कि यह चिड़िया क्या कर रही है।

किसान को नन्ही की मेहनत देखकर प्रेरणा मिली। उसने भी खे
को पानी देने का फैसला किया। उसने कुएँ से पानी निकाला और खेत
डाला।

धीरे-धीरे, खेत में हरियाली लौटने लगी। पौधे फिर से बढ़ने लगे और किसान के चेहरे पर खुशी छा गई।

नन्ही और किसान ने मिलकर पूरे खेत को हरा-भरा कर दिया। गां
के लोग भी उनकी मदद करने आए।

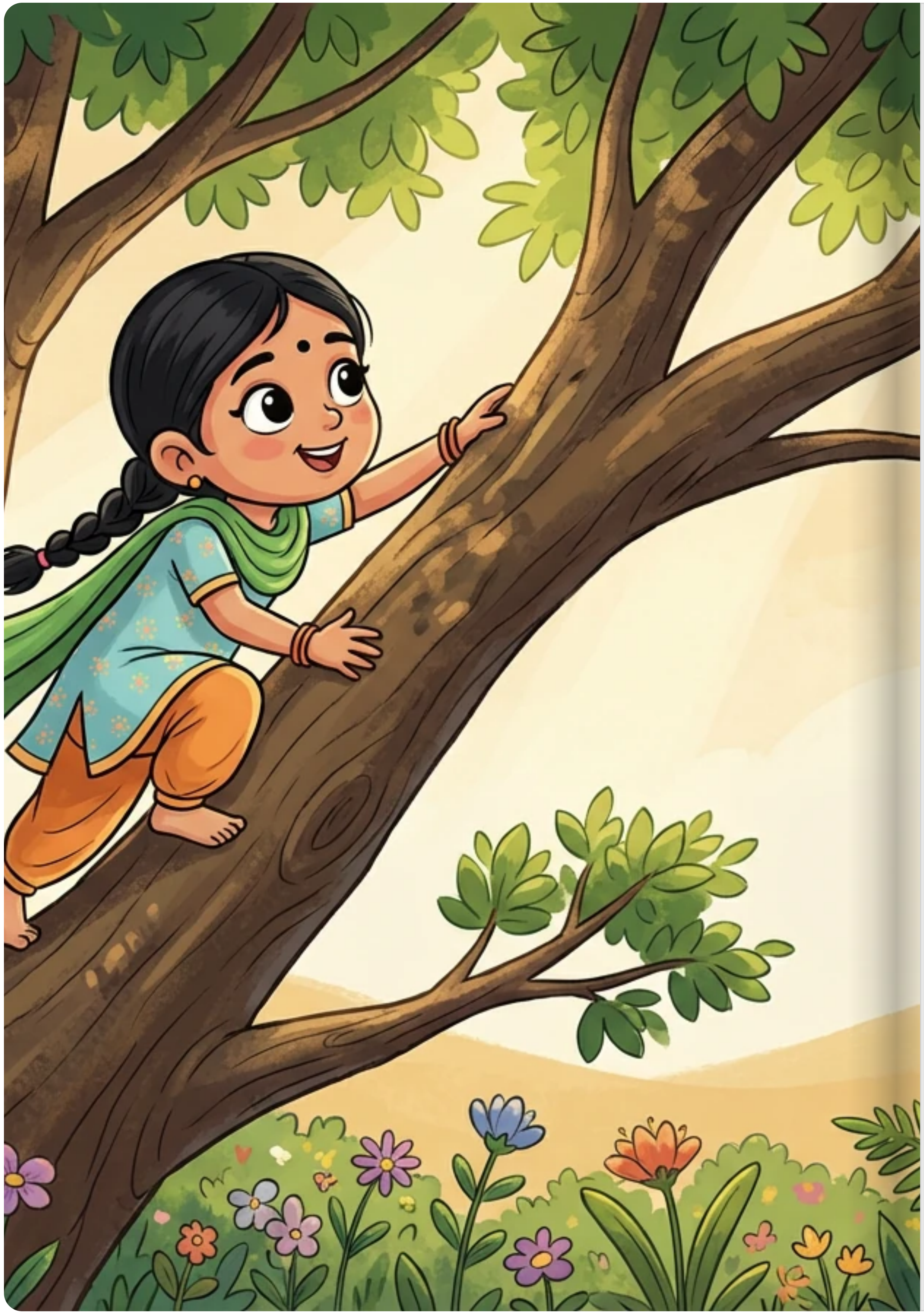

खेत फिर से लहलहाने लगा, और गाँव में खुशहाली लौट आई। नन्ही ने सबको सिखाया कि छोटे प्रयासों से भी बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।